प्रत्यक्षवाद : कॉम्ट का पद्धतिशास्त्र
(POSITIVISIM : METHODOLOGY OF COMTE)

प्रत्यक्षवाद कॉम्ट के चिन्तन का वह सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है जिसके द्वारा उन्होंने समाजशास्त्रीय अध्ययन को एक वैज्ञानिक रूप देने का प्रयत्न किया। मानव चिन्तन के तीन स्तरों के नियम की व्याख्या में कॉम्ट ने प्रत्यक्षवाद अथवा प्रत्यक्षवादी स्तर को बौद्धिक तथा ऐतिहासिक विकास की अन्तिम अवस्था के रूप में स्पष्ट किया। प्रत्यक्षवाद के जन्मदाता के रूप में कॉम्ट ने इसके आधार पर अनेक अवधारणाएँ विकसित कीं लेकिन उन्होंने पृथक् से न तो प्रत्यक्षवाद की कोई सुनिश्चित व्याख्या की और न ही इसे एक सुसम्बद्ध सिद्धान्त अथवा प्रणाली के रूप में प्रस्तुत किया। प्रत्यक्षवाद का उल्लेख विभिन्न स्थानों पर उनकी दो प्रमुख रचनाओं '**पॉजिटिव फिलासफी**' तथा '**पॉजिटिव पॉलिटी**' में देखने को मिलता है। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि कॉम्ट से पहले सभी सामाजिक विज्ञान दर्शन (Philosophy) के अधिक निकट थे। उस समय तक किसी ऐसी अध्ययन-पद्धति को विकसित नहीं किया जा सका था जिसके द्वारा सामाजिक घटनाओं का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किया जा सके। आरम्भ में ही यह ध्यान रखना आवश्यक है कि कॉम्ट द्वारा प्रस्तुत प्रत्यक्षवाद कोई नियम अथवा सिद्धान्त न होकर अध्ययन की एक ऐसी प्रणाली है जिसकी सहायता से कॉम्ट ने सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करने तथा समाजशास्त्र को वैज्ञानिक रूप देने पर बल दिया। इसे स्पष्ट करते हुए **जे. एच. टर्नर** (J. H. Turner) ने लिखा है, "कॉम्ट द्वारा प्रत्यक्षवाद के रूप में एक वैज्ञानिक पद्धति के उपयोग का उद्देश्य समाजशास्त्र को एक नये विज्ञान का रूप देना तथा इसे सामाजिक दर्शन से पृथक् करना था।"[1]

प्रत्यक्षवाद का अर्थ (Meaning of Positivism)

शाब्दिक रूप से प्रत्यक्षवाद का अर्थ घटनाओं का प्रत्यक्ष रूप से अवलोकन करके किसी निष्कर्ष तक पहुँचना है। फ्रान्सीसी परम्परा में 'Positive' शब्द का प्रयोग एक ऐसे दृष्टिकोण के लिए किया जाता है जो रचनात्मक, निष्पक्ष अथवा यथार्थ अवलोकन पर आधारित हो। कॉम्ट ने यह स्पष्ट किया कि प्राकृतिक विज्ञानों का इसलिए तेजी से विकास हुआ कि इनके द्वारा विभिन्न पदार्थों का अध्ययन कल्पना के आधार पर न करके निरीक्षण, परीक्षण तथा वर्गीकरण के आधार पर किया जाता है। प्राकृतिक विज्ञानी यह मानकर चलते हैं कि प्रत्येक पदार्थ की प्रकृति तथा उससे सम्बन्धित व्यवहार कुछ अपरिवर्तनशील नियमों पर आधारित होते हैं। यदि अवलोकन और प्रयोग के द्वारा इन नियमों को ज्ञात कर लिया जाय तो किसी भी पदार्थ की प्रकृति तथा उसके भावी व्यवहार को ज्ञात किया जा सकता है। यह दृष्टिकोण रचनात्मक, निष्पक्ष और यथार्थ है, इसीलिए इसे हम प्रत्यक्षवादी या 'Positive' दृष्टिकोण कहते

---

1 J. H. Turner : *op. cit.*, p. 21.

है। पदार्थ तथा प्राकृतिक घटनाओं के समान सामाजिक घटनाएँ भी कुछ निश्चित नियमों से नियन्त्रित और निर्देशित होती हैं। सामाजिक घटनाओं को संचालित करने वाले नियमों को धार्मिक तथा तात्विक आधार पर नहीं समझा जा सकता। प्रत्यक्षवाद ही एकमात्र वह तरीका अथवा प्रणाली है जिसके द्वारा घटनाओं का अवलोकन, परीक्षण और वर्गीकरण करके विभिन्न घटनाओं के पारस्परिक सम्बन्धों और उन्हें नियमित करने वाले नियमों को समझा जा सकता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि निरीक्षण, परीक्षण तथा वर्गीकरण पर आधारित वैज्ञानिक विधि द्वारा सामाजिक घटनाओं को समझना ही प्रत्यक्षवाद है।

कॉम्ट ने जिन विशेषताओं के आधार पर प्रत्यक्षवाद की विवेचना की है, उसे संक्षेप में स्पष्ट करते हुए **रेमण्ड एरों** (Raymond Aron) ने लिखा है, "प्रत्यक्षवाद का सम्बन्ध घटनाओं के अवलोकन, उनके विश्लेषण तथा उन घटनाओं के बीच पाये जाने वाले सम्बन्धों को नियमित करने वाले नियमों की खोज करने से है।"[1] इससे पुनः यह स्पष्ट होता है कि प्रत्यक्षवाद का तात्पर्य एक ऐसी पद्धति से है जो वैज्ञानिक ढंग से सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करने पर बल देती है। कॉम्ट यह मानते हैं कि सामाजिक विज्ञानों की विषय-वस्तु प्राकृतिक घटनाओं से अधिक जटिल है। कुछ प्राकृतिक घटनाएँ तो इतनी सरल होती हैं कि उन्हें सामान्य अवलोकन से ही समझा जा सकता है। यही कारण है कि प्राकृतिक विज्ञानों से सम्बन्धित घटनाओं का अध्ययन करने के लिए प्रत्यक्षवादी पद्धति का प्रयोग बहुत पहले ही आरम्भ हो गया। सामाजिक घटनाएँ अपनी प्रकृति से बहुत जटिल होती हैं, इसीलिए सामाजिक विज्ञानों में प्रत्यक्षवादी पद्धति का प्रयोग काफी बाद में आरम्भ हो सका। इस आधार पर प्रत्यक्षवाद को स्पष्ट करते हुए **कॉम्ट** ने लिखा कि "प्रत्यक्षवाद अवलोकन योग्य तथ्यों से सम्बन्धित वह पद्धति है जिसके द्वारा तथ्यों का विश्लेषण और वर्गीकरण करके उनसे सम्बन्धित नियमों की स्थापना की जाती है।" प्रत्यक्षवाद के अर्थ तथा प्रकृति को स्पष्ट करते हुए **सिन्हा एवं क्लोस्टरमेयर** (Sinha and Klostermaire) का कथन है, "वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा हम घटनाओं की प्रकृति को जान सकते हैं। प्रकृति की यथार्थ घटनाओं के अवलोकन के आधार पर ही प्राकृतिक नियमों की रचना की जाती है। प्राकृतिक घटनाओं के समान जब हम सामाजिक घटनाओं के प्रत्यक्ष अवलोकन तथा वर्गीकरण के द्वारा उन्हें संचालित करने वाले निश्चित नियमों की खोज करते हैं तब इसी विधि को प्रत्यक्षवाद कहा जाता है।"

प्रत्यक्षवाद की प्रकृति को स्पष्ट करने के लिए कॉम्ट ने इसे चिन्तन के धार्मिक और तात्विक तरीके से पूर्णतया पृथक् माना है। इसका कारण यह है कि धार्मिक, तात्विक तथा प्रत्यक्षवादी स्तर पर व्यक्तियों के विचार करने का तरीका एक-दूसरे से भिन्न होता है। **डॉ. ब्रिजेज** (J. H. Bridges) ने इस दशा को एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट करके प्रत्यक्षवाद की प्रकृति को स्पष्ट किया है। उनका कहना है कि यदि किसी व्यक्ति की जहर खाने से मृत्यु हो जाती है तो धार्मिक, तात्विक तथा प्रत्यक्षवादी आधार पर इस घटना की व्याख्या भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण से की जायेगी। धर्मशास्त्री ऐसी मृत्यु की व्याख्या प्रारब्ध, कर्मफल और ईश्वरीय इच्छा के आधार पर करेगा जबकि तत्वज्ञानी यह कहेगा कि जन्म और मृत्यु प्रकृति का एक शाश्वत नियम है तथा इसे एक स्वाभाविक घटना के रूप में मान लेना उचित है। इसके विपरीत, एक प्रत्यक्षवादी अथवा वैज्ञानिक मृत व्यक्ति का समुचित रूप से अवलोकन और परीक्षण करने

---

1 "Positivism consists in observing phenomena, in analysing them, in discovering the laws. governing the relations among them."
—R. Aron : *Main Currents in Sociological Thought*, p. 86.

के बाद ही यह स्पष्ट करेगा कि उस व्यक्ति की मृत्यु का वास्तविक कारण क्या है तथा सामान्य मृत्यु एवं जहर खाने से हुई मृत्यु में क्या अन्तर है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रत्यक्षवाद का सम्बन्ध किसी काल्पनिक विश्वास अथवा निरपेक्ष विचार से नहीं होता बल्कि इसका सम्बन्ध यथार्थ अवलोकन अथवा वैज्ञानिक सापेक्षता (Scientific relativism) से है।